

भारी क़र्ज़ा

इसे कौन चुका
सकता है?



भारी क़र्ज़ा

इसे कौन चुका
सकता है?

bhārī qarzā—ise kaun cukā saktā hai?

A Heavy Debt— Who Can Pay It Back?
(Urdu—Hindi script)

© 2019 MIK

published and printed by
Good Word, New Delhi

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

बहुत अर्सा गुज़रा कि एक बादशाह था जो भेस बदलकर अपनी रियाया के हालात मालूम किया करता था। उसका एक गहरा दोस्त था जिसके बेटे को उसने मुल्क के सरहद्दी क़िले पर बड़ी ज़िम्मेदारी सौंप रखी थी। इसके अलावा सरकारी ख़ज़ाना भी उसके सुपुर्द किया गया था।

होते होते बेटे की आदतें बिगड़ने लगीं। वह ऐशो-इशरत में फंस गया और अपना क़र्ज़ा चुकाने के लिए सरकारी ख़ज़ाने के पैसे उड़ाने लगा। उसका खयाल था कि जल्द ही रुपया ख़ज़ाने में वापस कर दूँगा। इस मक़सद के तहत वह जुआ खेलने लगा। लेकिन अफ़सोस कि जुए से उसे कुछ हासिल न हुआ बल्कि उसका क़र्ज़ा बढ़ता ही गया।

एक दिन उसे इत्तला मिली कि चंद दिन के बाद हिसाब-किताब की पड़ताल की जाएगी। यह पढ़कर वह निहायत परेशान हुआ। ज़िल्लत और रुसवाई के डर से उसने ख़ुदकुशी का इरादा कर लिया। लेकिन दिल में खयाल आया कि ज़रा ख़ज़ाने की कमी का

अंदाज़ा तो लगा लूँ और फिर ही अपने आपको गोली का निशाना बनाकर तमाम परेशानी से रिहाई पाऊँ।

वह हिसाब-किताब करने लगा। लेकिन जब नतीजा निकला तो उसे मज़ीद सदमा हुआ। मायूसी और नाऊम्मीदी के आलम में उसने वाजिबुल-अदा रक़म के नीचे लिख दिया, “भारी क़र्ज़ा—इसे कौन चुका सकता है?” परेशान तो पहले ही था। हिसाब करते करते वह इतना थक गया कि उस पर नींद ग़ालिब आ गई।

रात आधी से ज़्यादा गुज़र चुकी थी कि बादशाह अपने मामूल के मुताबिक़ फ़ौजी अफ़सर का भेस बदलकर क़िले में दाख़िल हुआ। रात की ख़ामोशी में वह क़िले के बरामदों में घूमने लगा। अचानक उसकी नज़र एक कमरे पर पड़ी जहाँ इतनी रात गए भी बत्ती जल रही थी। उसने आहिस्ता आहिस्ता कमरे का दरवाज़ा खोला तो क्या देखता है कि नौजवान अफ़सर खुली किताबों के दरमियान सो रहा है और खज़ाना भी खुला पड़ा है। बादशाह ने उसके पीछे खड़े होकर झाँका तो उसकी नज़र उस जगह पड़ी जहाँ लिखा था, “भारी क़र्ज़ा—इसे कौन चुका सकता है?”

बादशाह पूरा मामला समझ गया। पहले तो खयाल आया कि उसे फ़ौरन गिरिफ़्तार करा दूँ। लेकिन फिर उसे अपने अज़ीज़ दोस्त का खयाल आया कि ऐसा करने से उसकी बहुत बेइज़्ज़ती और रुसवाई होगी। वह चंद मिनट तक ख़ामोशी से खड़ा रहा और फिर

उस सवाल के नीचे अपना नाम लिखकर चला गया। मतलब यह था कि मैं तमाम क़र्ज़ा अदा करूँगा।

घंटे भर के बाद यह नौजवान जाग उठा। जब देखा कि रात काफ़ी गुज़र चुकी है तो उसने हाथ में पिस्तौल लिया। वह पिस्तौल का मुँह अपनी पेशानी की तरफ़ करने ही को था कि उसकी नज़र बादशाह के नाम पर पड़ी जो उसके सवाल के नीचे लिखा था। वह समझ गया कि सोते वक़्त बादशाह ने यहाँ आकर अपना नाम लिखा है। इससे उसने मुझे यकीन दिलाया है कि सज़ा देने की बजाए वह खुद मेरा क़र्ज़ा चुकाएगा।

अगले दिन बादशाह के क़ासिद ने आकर कमी को पूरा कर दिया। जब हिसाब की पड़ताल करनेवाले आए तो हिसाब में कोई कमी न पाई। क़र्ज़ा अदा हो चुका था।

यह कहानी इनसान की हालत की मिसाल है। इनसान उस अफ़सर की निसबत अल्लाह का कहीं ज़्यादा मकरूज़ है। अपना क़र्ज़ा चुकाने की कोशिश में वह तरह तरह के तरीक़े इख़्तियार करता है। अकसर लोग समझते हैं कि अच्छा काम करने से हम यह क़र्ज़ा चुका सकते हैं। बेशक नेकी करना इनसान का फ़रज़ है। लेकिन सवाल यह है कि क्या नेक आमाल बुरे कामों की सज़ा दूर

कर सकते हैं? मिसाल के तौर पर क्या किसी खूनी की सज़ा महज़ इस बिना पर माफ़ हो सकती है कि उसने यतीमों की मदद की है? हरगिज़ नहीं। पाक नविशतों का फ़रमान है कि

हम में से हर एक को अल्लाह के सामने अपनी जिंदगी का जवाब देना पड़ेगा। (रोमियों 14:12)

यह भी लिखा है कि अल्लाह

जानिबदारी नहीं करता बल्कि आपके अमल के मुताबिक़ आपका फ़ैसला करेगा। (1 पतरस 1:17)

ख़ुदा आदिल है। इसलिए इनसान अपने गुनाह के सबब से जहन्नम का सज़ावार है। लेकिन अल्लाह तआला को हमसे अज़ हद मुहब्बत भी है। एक तरफ़ तो वह हमारी हलाकत नहीं चाहता, लेकिन दूसरी तरफ़ उसका अदल तक्राज़ा करता है कि इनसाफ़ भी हो।

अल्लाह ने अपनी मुहब्बत और अदल का यह तक्राज़ा किस तरह पूरा किया? उसने हज़रत ईसा को इस दुनिया में भेजा ताकि वह हमारे गुनाहों का क़र्ज़ा चुकाए। हज़रत ईसा ने अपने कफ़ारे के वसीले से इनसान के हर गुनाह की पूरी पूरी तलाफ़ी कर दी। यसायाह नबी ने सदियों पहले इसकी पेशगोई यों की थी :

उसने हमारी ही बीमारियाँ उठा लीं, हमारा ही दुख भुगत लिया...उसे हमारे ही जरायम के सबब से छेदा गया, हमारे ही गुनाहों की खातिर कुचला गया। उसे सज़ा मिली ताकि हमें सलामती हासिल हो, और उसी के ज़ख़मों से हमें शिफ़ा मिली। रब ने उसे हम सबके कुसूर का निशाना बनाया।
(यसायाह 53:4-6)

और इंजील जलील में लिखा है

अल्लाह ने मसीह के वसीले से अपने साथ दुनिया की सुलह कराई। (2 कुरिंथियों 5:19)

मुअज़ज़ज़ क़ारी! लाज़िम है कि हम देर न करें बल्कि सब इस खुशख़बरी पर ईमान लाकर नजात के इस इलाही इंतज़ाम से फ़ायदा उठाएँ।

अब क़बूलियत का वक़्त आ गया है, अब नजात का दिन है। (2 कुरिंथियों 6:2)